आक्रमण कब का हो चुका

कहानिया

पेद्दिंटि अशोक कुमार

आक्रमण कब का हो चुका

कहानिया

पेद्दिंटि अशोक कुमार

Spruha Sahithi Samstha
Hyderabad

हिन्दी अकादमी के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित

Aakraman Kab ka ho Chuka
Short Stories
by Peddinti Ashok Kumar (Telugu Writer)

Translated by : *R. Shanta Sundari*

First Edition : August, 2013

© Author

Price : 100 /-

for copies :

Peddinti Ashok Kumar
H. No. 4-4-90/1, Reddywada,
Sirisilla, Karimnagar Dist., AP - 505 305
email : akpeddinti@gmail.com, Cell : 9441672428

Juluru Gourishankar
Journalist, Editor
1-8-702/33/20/A
Padma Colony, Nallakunta
Hyderabad - 500 044.

&

All Leading Book Houses

Printed by
Ankush
Nallakunta, Hyd - 44
@ 9912929078, 040-27663211

आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित

विषयसूची

आक्रमण कब का हो चुका	1
खून में घोला जाता जहर	15
ख़ून के धब्बों वाले सौ के नोट	26
जोंक	39
फन के साये में	52
वह घर बंद हो गया	61
धरती माँ क्या जवाब दे!	77
गिद्ध	84
बधाई हो!	90
भूमा	98
एजेंडा	109

आक्रमण कब का हो चुका

पक्की सड़क साँप की तरह बल खाती हुई गाँव की ओर चली गयी थी। उस सड़क के दोनों ओर लाल, पीले और सफेद रंग के फूलों से भरे गुलाब के बाग थे। पौधे हवा में झूम रहे थे। मगर इतने सारे फूलों के होने के बावजूद तितलियाँ कहीं दिखायी नहीं दे रही थीं। भौंरों का गुंजन भी नहीं था, न ही खुशबू बिखरी थी। बस थी, तो तेज बू कीटनाशक दवाइयों की।

धूप बड़ी तेज थी।

''तो आप अपने साथ मास्क लाये हैं न?'' ऑटो में बैठते ही ड्राइवर ने पूछा।

मैंने कुछ नहीं कहा, तो फिर बोला, ''अभी आपने कहा तो था कि सर्वाइपल्ले जाना है!''

कंधे पर बैग, हाथ में कुछ इंस्ट्रुमेंट्स, केले, मिनरल वॉटर की बोतल...उसे लगा होगा कि मैं किसी पर्यवेक्षण के काम पर जा रहा हूँ।

''तो...?'' मैंने पूछा।

''आजकल फूलों के खेत वगैरह के लिए बहुत सारे लोग सर्वे करने आ रहे हैं। गाँव पहुँचने के लिए चार किलोमीटर लंबी सड़क पर गुलाब के बगीचों से होकर सफर करना पड़ता है। हमें तो आदत पड़ गयी है, पर एक-दो आदमी तो ऑटो में ही बेहोश हो गये थे।'' वह बोला।

''तुम वहीं के रहने वाले हो? किसके बेटे हो?'' उसे पहचानने की कोशिश करते हुए मैंने पूछा।

''मुर्गीवाले वेंकट का बेटा हूँ।'' उसने गियर बदलते हुए कहा।

पाँच साल पहले यह छोटा-सा लड़का था । इसीलिए मैं नहीं पहचान सका । इसका बाप पोल्ट्री चलाता था । उसके असली नाम की जगह 'मुर्गीवाला' नाम ही इस्तेमाल किया जाने लगा । जब वह मर गया, तो अखबार में भी वही नाम लिखते हुए मैंने संपादक से कहा था, ''मुर्गीवाला वेंकट मरा नहीं, उसकी हत्या की गयी थी! पोल्ट्री में उसे दस साल का अनुभव था । एंटी डंपिंग कानून और कस्टम्स ड्यूटी से बचकर अमरीकी चिकन के लेगपीस और एग-पाउडर अपने देश में सस्ते दामों पर मिलने लगे, तो हमारा मुर्गी-पालन उद्योग ठप्प हो गया । बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उनका दिल खोलकर स्वागत करने वाले सरकारी नेताओं ने मिलकर यह हत्या की थी ।''

मेरे आवेश को देखकर विरागी की तरह मुस्कराते हुए संपादक ने कहा था, ''इस 'डार्क फ्रोजेन चिकन' में चर्बी का अनुपात अधिक होता है । इस लेगपीस को वे खाते नहीं हैं । समुद्र में फेंक देने से पर्यावरण को हानि पहुँच सकती है, यह सोचकर विकासशील देशों को सस्ते दामों पर बेच देते हैं । कोल्ड स्टोरेज न करने के कारण उसके साथ कई तरह के कीड़े भी हमारे देश में आ रहे हैं । यह सब जानते हुए भी सरकार आँखें क्यों मूँद लेती है, बताओ...?''

उस वक्त वेंकट की आत्महत्या को सुर्खियों में जगह देकर मैंने कई लेख लिखे । मगर उसका नतीजा केवल यह हुआ कि सरकार ने उसे 'एक्स ग्रेशिया' और सहानुभूति देकर समझ लिया कि उसकी जिम्मेदारी पूरी हो गयी । उसके बाद मछली के व्यापारी पोचिरेड्डी, दूध बेचकर गुजारा करने वाले नरसिंहुलु, तेल की चक्की वाले इस्तारी और सूरजमुखी की खेती करने वाले किसानों की आत्महत्याओं के पीछे के असली कारण प्रकाश में आने लगे । मगर न जाने किसने धमकाया या पुचकारा, संपादक ने उन सच्चाइयों को दरकिनार कर दिया ।

इधर या उधर, जहाँ तक नजर जाती, एक भी पेड़ नहीं था । जब हेलीकॉप्टर से कीटनाशक दवा को छिड़कना शुरू किया गया था, तभी रास्ते में आने वाले सभी पेड़ों को काट डाला गया था । उनके ठूँठों पर कहीं फिर से हरियाली न फूट आये, इसलिए उन पर तेजाब डाला गया था । बीच-बीच में छाया देने के लिए मचान बनाये गये थे । सड़क सुनसान थी ।

ऑटो मोड़ पर आया, तो मुझे कुछ याद आ गया :

''मेरी मक्के की फसल सेठ ने खरीद ली । भुट्टे तोड़कर ट्रक पर लादकर कामारेड्डी बाजार भेज दिये । अब अगर हमें भी मक्के की जरूरत पड़ती है, तो वहीं जाकर खरीदना पड़ता है ।'' दो भुट्टे भूनकर मुझे पकड़ाते हुए देवैया ने उदास स्वर में कहा था । यह बहुत दिनों पहले की बात थी ।

''गाँव में उगी हर एक फसल शहर जाती है । हमारी फसल, सुंदर पैकेटों में, शहरीकृत होकर, ऊँचे दामों पर हमारे ही पास लौट आती है । यह प्रक्रिया न जाने हमें कहाँ ले जायेगी!'' मैंने कहा था और मुझे आलू चिप्स, पॉपकॉर्न, दूध के पैकेट, और हाल ही में शुरू की गयी सब्जियों की पैकिंग वगैरह याद आ गयी थी । तब तक यहाँ कांक्रीट और पिघलते लावे जैसे कोलतार पर रोडरोलर नहीं चला था । चारों ओर कीचड़...पानी...मिट्टी की बू थी ।

फूलों पर से आती हुई हवा में कीटनाशक दवा की बदबू थी, जिससे मुझे साँस लेने में तकलीफ होने लगी । सड़क के किनारे किसान ड्रिप इर्रिगेशन पंप की मरम्मत कर रहे थे । मैंने ऑटो रुकवाया और उतर गया ।

किसी ने मेरी तरफ नहीं देखा । उनके चेहरों पर मास्क लगे थे । ड्रिप के आने के बाद पानी के इस्तेमाल का तरीका ही बदल गया है । पौधों की जड़ों में पाइपों से पानी बूँद-बूँद टपकता है । मुझे किसानों के आँसू याद आ गये । मैं आगे बढ़ा ।

''ओ भैया! वहाँ से हट जाओ...अब डेंड्रान का छिड़काव करेंगे । यहाँ छाया में आ जाओ ।'' मचान पर से किसी ने आवाज दी ।

मचान के पास पहुँचा, तो पता चला कि इससे पहले छिड़काव रात के समय किया जाता था । लेकिन अंधेरे में हाइ पॉवर सर्चलाइट... ज्यादा पेट्रोल का खर्चा! इसीलिए अब दिन में होता है । कोई पूछने वाला नहीं...पूछने पर कोई ध्यान देने वाला नहीं । ये सारे कानून तो सिर्फ हॉलैंड में ही लागू किये जाते हैं ।

मैं सीढ़ी चढ़कर मचान पर गया । लोहे की सलाखों पर ताड़ के पत्ते बिछाये गये थे । मेरी साँस में साँस आयी । मिनरल पानी की बोतल निकाली । एक औरत वहाँ बैठी पैकट में से चावल खा रही थी । फूलों की खेती शुरू हो जाने के बाद हर कहीं ये पैकेट आजकल दिखायी देने लगे हैं । 'अधिक पोषक शक्ति वाला' कहकर टी.वी. में विज्ञापन । उसकी ओर गौर से देखा । माथे पर घाव का निशान था, जैसे मानवता पर लगा अमिट धब्बा हो ।

बीते हुए दिन आँखों के आगे घूम गये ।

चीख-पुकार...चिल्लाहट...आवेग...जनता का पारावार!

बिजली की दरें बढ़ाये जाने के विरोध में नारे...आंदोलन!

''हमें आंदोलन करना है, एल्लक्का! हमारे नेता विश्व बैंक के हाथों की कठपुतलियाँ हैं । हम चुपचाप देखते रहेंगे, तो ये देश को बेच देंगे...'' मैंने तैश में आकर कहा था ।

पता नहीं मेरी बात उसकी समझ में आयी थी कि नहीं, पर वह इतना तो समझ ही गयी थी कि बिजली की दरें आसमान छूने लगी हैं और जरूरत के मुताबिक बिजली मिलती नहीं है । फलस्वरूप पूरा गाँव चल पड़ा था । जो भी वाहन मिला, उसमें बैठकर लोग विधानसभा के सामने इकट्ठे हो गये थे । कर्फ्यू...संघर्ष...गोलीबारी...कुछ लोग मर गये थे । एल्लक्का के माथे पर लाठी की मार पड़ी थी । उसी घाव का निशान है एल्लक्का के माथे पर ।

''कहाँ जाना है...इतनी धूप में निकल पड़े हो?'' आत्मीयता से भरा सवाल।

''तुम देवैया की बीवी हो न?'' कोलतार की सड़क पर दिखायी देने वाली मृगतृष्णा पर से गुजरने वाले फूलों के ट्रक को देखते हुए मैंने धीमी आवाज में पूछा । उसने अजीब नजरों से मेरी तरफ देखा ।

''आप कौन हैं, साब...मेरे घर वाले को याद कर रहे हो? उसको गुजरे तो पाँच साल से ऊपर हो गये ।'' एल्लक्का की निर्जीव आँखों में आँसू आ गये । बीते दिनों को कुरेदने वाली यादों में से वेदना पिघलकर बहने लगी ।

उस जमाने के किसान और खेत-मजदूर आज कहाँ...? उस तरह की पंचायतें और उनके फैसले आज कहीं नहीं है? हरित क्रांति, भू-संस्करण, हाइब्रिड बीज, ग्रो मोर फूड्स, पंचवर्षीय योजनाओं का विकास, स्वयं समद्धि, पी.डी.एस., एफ.सी.आइ., खाद्य पदार्थों की सुरक्षा...जब आयातों पर से पाबंदी हटा दी गयी, तो ये सब चीजें बेमानी हो गयीं । अनाज का दाम गिर गया । सरकार ने कार्पोरेट कृषि शुरू कर दी । वाणिज्य फसलों को प्रोत्साहन दिया गया । फलस्वरूप फूलों की खेती करने के लिए हॉलैंड बोकारो कंपनी ने प्रवेश किया । कंपनी के हित में खेत को किराये पर देने के कानून में सरकार ने परिवर्तन कर दिये ।

एल्लक्का जोर-जोर से रोने लगी । मैंने सोचा था कि रोना सुनकर लोग उसे चुप कराने आयेंगे । पर कोई क्यों नहीं आ रहा है?

माँ जैसी जमीन जब हाथ से निकल गयी, तो दिल पत्थर जैसा बन गया । लोग पत्थर जैसे निर्मम हो गये । मशीनों की तरह काम करते हैं । रोना-धोना साधारण बात हो गयी है । अब आँसुओं का भी अकाल पड़ा है ।

कहीं एक तरफ से हो तो बतायें । अक्वा कल्चर ने मछलियों की नीली क्रांति को विच्छिन्न कर दिया था । पाम ऑइल ने पीली क्रांति को खत्म कर दिया था । श्वेत क्रांति को सिंथेटिक मिल्क के पैकेटों ने ध्वस्त कर डाला था । नीदरलैंड का दूध, अमरीकी गेहूँ, चावल, चीनी, दालें...सस्ते में बाजारों में बाढ़ की तरह आ गये । उसके बाद कीटनाशक दवाइयों ने जीर्णाशयों में छेद कर दिये ।

मुझे फिर एक पुरानी बात याद आ गयी ।

''साब...सुना था कि परसों अखबारों में धान के बारे में लिखा गया था । कम से कम अब तो धान को खरीद लेंगे न?'' गाढ़ी दही परोसकर एल्लक्का ने बड़ी उम्मीद के साथ पूछा था । उस वक्त देवैया भी वहाँ मौजूद था ।

''अरे, पहले खाना तो खाने दे! अखबार वाले ठान लें, तो कुछ भी कर सकते हैं । ये तो दो दिन से हमारे साथ ही हैं । गोदाम के पास ये साहब बात करने लगते हैं, तो एम.आर.ओ. का पेशाब निकल आता है!'' देवैया ने असीम आत्मविश्वास के साथ कहा था । उस दिन मुर्गी का सालन और मछली का झोल बना था । उन्हें पूरा विश्वास था कि मैं उनके जीवन को बदलकर रख दूँगा!

लेकिन पत्र-पत्रिकाएँ, आलोचना, सभा-सम्मेलन, आंदोलन-ये सब इस स्वेच्छा व्यापार को रोकने में कामयाब नहीं हो सके । भूमंडलीकरण के तकनीकी ज्ञान के जरिये, चीजों के प्रवाह के जरिये, वाणिज्य गाँवों में घुस गया । उद्योगों पर, बायो-टेक्नोलॉजी पर, इन्फोटेक शोधकार्यों पर उनकी पकड़ मजबूत हो गयी ।

मेरी जेब में रखे सेलफोन की घंटी बजी । मैंने कहा, ''हेलो!'' संपादक का फोन था ।

एल्लक्का का रोना अभी भी जारी था ।

''कहिए!'' मैंने अनासक्त आवाज में कहा ।

''मीटिंग शनिवार को नहीं, शुक्रवार को है ।''

''क्यों?'' मैंने आतुर होकर पूछा ।

''सरकार की चाल बदल गयी है ।''

End of Preview.

Rest of the book can be read @
http://kinige.com/kbook.php?id=2144

* * *

Read other books by Peddinti Ashok Kumar @
http://kinige.com/kbrowse.php?via=author&name=Peddinti+Ashok+Kumar&id=161